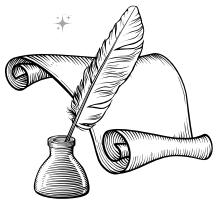

Poems

Poet: *Brahma Kumaris*

अमृत वेला का अनुभव

बाप के दिल दरवाजे पर जब दी मैंने दस्तक
अपनी रूहानी दृष्टि से चमकाया मेरा मस्तक

अनन्त रूहानी शक्ति का हुआ मुझमे संचार
ऐसे लगा जैसे मिट गये मेरे जीवन से विकार

पवित्रता की दिव्य मूरत बाबा ने मुझे बनाया
यही दिव्य रूप लेकर मैं लौट धरा पर आया

बाबा से नजर मिलते ही चोरी हुआ देहभान
देह मेरी निढ़ाल पड़ी जागा मेरा आत्मभान

छोड़कर देह का वस्त्र बाप के पास मैं आया
आत्म स्वतंत्रता का अनुभव मन में समाया

पाया मैंने सबकुछ जो देह में रहकर ना पाया
दिव्य गुणों से बाप ने मुझको धनवान बनाया ||